7. जनसंख्या नियंत्रण

भारत आबादी के इतने वर्षों बाद भी अनेक समस्याओं से ग्रसित है, उनमें से सबसे गंभीर भंयकर समस्या है 'बढ़ती जनसंख्या'। यही समस्या अन्य अनेक समस्याओं के मूल में है। गरीबी, बेरोजगारी, घटते संसाधन, भ्रष्टाचार, निरक्षरता और सामाजिक समस्यायें आदि अनेक समस्याओं की जड़ यही है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की आबादी 1 अरब 21 करोड़ है इसमें 62 करोड़ पुरुष और 58करोड़ महिलाएं है यदि विश्व की जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो चीन के बाद भारत का जनसंख्या में दूसरा स्थान है। परन्तु वह दिन भी दूर नहीं जब भारत चीन से भी आगे निकल जाएगा। विभिन्न अध्ययनों से यह पता चला है कि सन् 2025 तक भारत चीन को भी पछाड़ देगा और विश्व का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन जाएगा।

हमारे देश में प्रत्येक 1.2 क्षण में एक शिशु का जन्म, प्रत्येक मिनट में 50 शिशु, प्रति घण्टा 3 हजार शिशु, प्रतिदिन 72 हजार बच्चे प्रत्येक वर्ष 1 करोड़ 70 लाख की वृद्धि यानि प्रतिवर्ष दो दिल्ली तैयार हो जाती है। जनगणना के अनुसार 1901 में भारत की जनसंख्या केवल 238.4 मिलियन थी जो 2011 में बढ़कर 1210.2 मिलियन हो गयी है। यदि जनसंख्या वृद्धि की तुलना 1901 की जनसंख्या से की जाए तो पता चलता है कि 1911 में जनसंख्या वृद्धि 5.75% थी जो वर्तमान में 48% हो गई है।

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या (मिलियन में)	1901 की तुलना में वृद्धि (%)
1901	238.4	-
1911	252.1	5.75
1921	251.3	5.42
1931	279.0	17.02
1941	318.7	33.67
1951	361.1	54.47
1961	439.2	84.25
1971	548.2	129.44
1981	683.3	186.64
1991	846.3	255.0
2001	1028.7	330.8
2011	1210.2	408.0

जनसंख्या, वृद्धि दर, जन्म-मृत्यु दर और लिंगानुपात (भारत 1901-2011): स्त्रोत - जनगणना 2011, भारत सरकार।

चिकित्सीय सुविधाएं, संक्रामक रोगों पर नियन्त्रण, मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्रों की उपलब्धता से बाल एवं मातृ मृत्यु दर कम होती जा रही है तथा जन्म-दर बढ़ती जा रही है फलतः जनसंख्या निरन्तर तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। मृत्यु दर में काफी हद तक गिरावट आने से जो स्थिति उत्पन्न हुई है वह जनसंख्या विस्फोट है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण:-

1. जन्मदर का मृत्यु दर से अधिक होना
2. जल्दी शादी और सार्वभौमिक विवाह प्रणाली
3. गरीबी और निरक्षरता
4. पुराने सांस्कृतिक आदर्श
5. अवैध प्रवासी

जनसंख्या विस्फोट से उत्पन्न समस्याएँ-

विश्व की करीब 16प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है जबकि विश्व का केवल 2.4 प्रतिशत भूमि क्षेत्र ही भारत के पास है। आबादी की तुलना में स्थान कम है, जो संसाधनों की उपलब्धता पर दबाव डालता है और फलस्वरूप कई समस्याएँ पैदा हो गई है।

1. **भुखमरी:-** भोजन हमारी मूलभूत आवश्यकता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि योग्य भूमि निरन्तर आवासीय भूमि में बदलती जा रही है। फलस्वरूप एक ओर तो खाद्यान्न के पैदावार में कमी होना स्वाभाविक है, तो दूसरी ओर जनसंख्या की भोजन सम्बन्धी आवश्यकताएँ निरन्तर बढ़ती जा रही है। कहने का तात्पर्य है कि भोज्य पदार्थों का उत्पादन जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नहीं हो पायेगा। आज भी हमारे देश की जनसंख्या के 24

वर्ष	जनसंख्या (मिलियन में)	जनसंख्या में परिवर्तन	वृद्धि दर (:)	अशोधित जन्म दर	अशोधित मृत्यु दर	लिंग अनुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाएं)
1901	238.4		–	45.8	44.4	972
1911	252.1	13.7	0.56	49.2	42.6	964
1921	251.3	–0.8	–0.03	48.1	47.2	955
1931	279.0	27.7	1.04	46.4	36.3	950
1941	318.7	39.7	1.33	45.2	31.2	945
1951	361.1	42.4	1.25	39.9	27.4	946
1961	439.2	78.1	1.95	41.7	22.8	941
1971	548.2	109.1	2.2	41.2	19	930
1981	683.3	135.1	2.22	37.2	15	934
1991	846.3	163.1	2.14	32.5	11.4	927
2001	1028.7	182.3	1.97	24.8	8.9	933
2011	1210.2	181.5	1.64	–	–	940

प्रतिशत भाग को दो समय का भोजन भी मुश्किल से मिल पाता है। भोजन की कमी का प्रभाव बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास तथा वयस्कों की कार्यक्षमता पर पड़ता है जो हमारे देश के भावी विकास को अवरूद्ध करते है। अत: यह आवश्यक है कि जनसंख्या वृद्धि दर पर नियन्त्रण किया जाये।

2. **स्वच्छता का अभाव:–** अधिक जनसंख्या गन्दगी को जन्म देती है। इस समस्या से मुक्ति पाने के लिये अधिक धन, श्रम व समय की व्यवस्था करनी होती है। यदि यह व्यवस्थाएँ समय रहते नियमित रूप से न की जाए तो विभिन्न बीमारियाँ जैसे उल्टी दस्त, बुखार, हैजा, मलेरिया आदि फैल जाती है। कई बार ये बीमारियाँ महामारी का रूप भी ले लेती है और कई लोगों की मृत्यु का कारण बन जाती है।

3. **स्वच्छ पीने योग्य पानी की कमी:–** बड़े शहरों से लेकर छोटे गांवों तक में जल की कमी देखी जा सकती है। इस कमी का एक कारण

चित्र 7.1 : भुखमरी

चित्र 7.2 : पानी की कमी

जनसंख्या वृद्धि है क्योकि जितने अधिक लोग होंगे, पानी उतना ही अधिक खर्च होगा। आपने पढ़ा व सुना होगा कि बढ़ती जनसंख्या की आवास ईधन व उद्योगों की आवश्यकता पूर्ति हेतु वनों की कटाई दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। परिणाम स्वरूप बारिश अनियमित रूप से हो रही है और साल दर साल भू-जलस्तर गिरता जा रहा है। देश के कई राज्यों में बाढ़ की स्थिति है तो दूसरे राज्यों में अकाल की स्थिति पिछले कई सालों से निरन्तर बनी हुई है। इसके अतिरिक्त जल की कमी बीमारियों को भी आमन्त्रित करती है।

4. **आवास की कमी:–** जल की कमी के साथ-साथ प्रति व्यक्ति भूमि की उपलब्धता में कमी होती जा रही है। भूमि की कमी के कारण अब पहाड़ों, जंगलों और झीलों पर भी अतिक्रमण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जगह-जगह झुग्गी झोपड़ियों कुकरमुत्ते की तरह बढ़ती जा रही है। जहाँ पर रहने, पानी, सफाई आदि की व्यवस्था नहीं के बराबर होती है जो कि बीमारियों को जड़ है। वर्षों पूर्व जिस एक मकान में एक परिवार निवास करता था आज उसी मकान में

चित्र 7.3 : आवागमन की समस्याएँ

कई परिवार एक साथ रहते है, कारण–जनसंख्या वृद्धि।

5. **आवागमन की समस्याएँ:–**आपने बसों और रेलगाड़ियों में भीड़ तो देखी ही होगी यहां तक कि कई बार लोगों को उनकी छतों पर बैठकर यात्रा करते भी देखा होगा। ये दृश्य जनसंख्या विस्फोट की ही देन है। हालाँकि हमारे देश में प्रतिवर्ष आगमन के साधनों में वृद्धि की जाती है, फिर भी लगातार जनसंख्या वृद्धि के कारण स्थिति लगभग ज्यों की त्यों ही बनी रहती है।
6. **अपर्याप्त वस्त्र:–**देश में वस्त्रों का निर्माण न केवल देशवासियों की आवश्यकता पूर्ति हेतु बल्कि वस्त्रों तथा पोशाकों का निर्यात कर विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिये भी किया जाता है। वस्त्रों के निर्माण में प्रतिवर्ष वृद्धि देखी गई है फिर भी गरीबी की रेखा के नीचे बसर कर रहे परिवारों को पर्याप्त वस्त्र उपलब्ध नहीं होते है। और कई बार बच्चों व वृद्धों की शीत ऋतु में इस कारण से मृत्यु भी हो जाती है।
7. **सीमित चिकित्सा एवं शिक्षा सुविधाएँ:–**आपने पढ़ा कि अधिक जनसंख्या गन्दगी को और गन्दगी बीमारियों को आमन्त्रित करती है इससे चिकित्सा सुविधाओं की आवश्यकताएँ बढ़ जाती है। हालाँकि केन्द्र व राज्य सरकारें पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत चिकित्सा मद पर बजट का बड़ा हिस्सा खर्च करती है फिर भी आपने सरकारी अस्पतालों में मरीजों को लम्बी कतार में खड़े हुए देखा होगा और अस्पताल में भरती मरीजों को पलंग की जगह जमीन पर लेटे हुए भी देखा होगा। यह भी जनसंख्या विस्फोट का ही नतीजा है। वर्ष दर वर्ष विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने के बावजूद इनमें दाखिलों की समस्या का अनुभव आपने भी किया होगा।

कहने का तात्पर्य यह है कि हम साधनों में कितनी ही वृद्धि क्यों न कर लें, जब तक जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं होगा उपरोक्त सभी समस्याओं का समाधान नहीं हो पायेगा। जनसंख्या विस्फोट के फलस्वरूप गरीबी, पर्यावरण प्रदूषण, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शोषण, अपराध जैसी कई समस्याएँ भी हमारे सामने मुंह फाड़े खड़ी है। सरकार द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न योजनाएँ जैसे परिवार नियोजन, रोजगार योजनाएँ, कार्य के बदले भोजन योजना, ग्रामीण विकास योजनाएँ, सुखी परिवार एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिये बच्चों व माताओं के लिये कार्यक्रम आदि के बावजूद भी समस्याओं में कोई विशेष कमी नहीं आई है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम अपनी जनसंख्या वृद्धि पर सार्थक अंकुश नहीं लगा पाये है।

जनसंख्या शिक्षा

हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के कई कारण है, जैसे कम उम्र में शादी होना, अशिक्षा, गरीबी, निम्न जीवन स्तर, परिवार नियोजन की जानकारी का अभाव, पुत्र की चाहत, जितने हाथ उतना काम की विचारधारा, धार्मिक अन्धविश्वास आदि। भारत की तेज रफ्तार से बढ़ती हुई आबादी हमारे चहुँमुखी विकास के लिए बाधक सिद्ध हो रही है। इस बढ़ती आबादी की दर को घटाने के लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक नागरिक में जनचेतना की भावना को जागरूक कर परिवार को सीमित एवं स्वस्थ रखने के तरीकों की तरफप्रेरित किया जाये।

जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रण में लाने का सबसे कामयाब तरीका है कि हम अपने परिवार को सीमित रखें। इसके लिये सरकार ने तीसरी

चित्र 7.4 : सीमित चिकित्सा सुविधाएँ

चित्र 7.5 : सुखी परिवार

पंचवर्षीय योजना के तहत परिवार नियोजन कार्यक्रम जिसे अब **''परिवार कल्याण कार्यक्रम''** कहते है, चला रखा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अनुरूप जन्मदर को घटाकर जनसंख्या को स्थिर रखना है। भारत ही पहला देश है जिसने परिवार नियोजन को योजनाबद्ध तरीके से संजोकर क्रियान्वित किया है।

परिवार नियोजन

''परिवार नियोजन का अर्थ है, दम्पत्तियों द्वारा इच्छानुसार बच्चों को जन्म देकर परिवार को सीमित रखने के लिए योजना तैयार करना जिससे कि परिवार शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं संवेगात्मक रूप से सुखी, सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रह सकें।

परिवार नियोजन का उद्देश्य मात्र जन्म दर को ही नियन्त्रित नहीं करना है बल्कि परिवार के सभी सदस्यों के कल्याण एवं स्वास्थ्य की देखभाल भी करना है।

चित्र 7.6 : परिवार नियोजन कार्ड

भारत में परिवार नियोजन एसोसियेशन की स्थापना सन् 1949 में हुई थी पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत परिवार नियोजन सेवाओं और शिक्षा कार्यक्रमों का विकास और प्रसार किया जाता है। प्रतिवर्ष **11 जुलाई को जनसंख्या दिवस** मनाया जाता है। वर्तमान समय में 'परिवार नियोजन' का नाम बदलकर 'परिवार कल्याण' रखा गया है।

लड़के की चाहत तथा बालिका की उपेक्षा:

सरकार द्वारा परिवार कल्याण कार्यक्रम वृहद् स्तर पर चलाये जाने के बावजूद भी जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं हो पाया है। इसका एक प्रमुख कारण है हमारे पुरुष प्रधान समाज में वंश वृद्धि के लिये लड़के की चाहत। पुत्र को वंश घटक माना जाता है यानि कि वह धारणा है कि पुत्र के बिना वंश समाप्त हो जायेगा। यही वजह है कि पुत्र की चाहत हर समुदाय व

चित्र 7.7 : बेटी बचाओ अभियान

आर्थिक स्तर के परिवारों में अत्यधिक होती है। इस चाह से एक ओर तो परिवार का आकार बढ़ता जाता है, तो दूसरी ओर इस पुत्र चाहत से बालिका भ्रूण हत्या को प्रोत्साहन मिला है। फलस्वरूप समाज में लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा गिरता जा रहा है, यह भविष्य के लिये एक खतरे का विषय है। मनुष्य जाति की रक्षा हेतु यह आवश्यक है कि बालक की तरह बालिका को भी समाज में जीने का अधिकार मिले तथा जन्म के पश्चात् उसे बालक के समान भोजन, शिक्षा, वस्त्र, स्वास्थ्य आदि की पर्याप्त सुविधाएँ मिलें।

आज स्थिति बदल रही है। शिक्षा तथा रोजगार के द्वारा बालिकाएं समाज में सम्मानित स्थान पा रही है। किन्तु फिर भी अभी स्थिति को और सुधारने की जरूरत है जिसकी जिम्मेदारी युवा तथा किशोर वर्ग की है। जनसंख्या शिक्षा द्वारा बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं को अवगत कराते हुए परिवार को नियोजित व सीमित रखने के लिये परिवार कल्याण कार्यक्रम के बारे में किशोरों एवं किशोरियों को जानकारी दी जाये।

जनसंख्या पर नियंत्रण के लिए परिवार नियोजन के कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार करना होगा, उन्हें लोकप्रिय बनाना होगा, जनसाधारण में लड़कों का मोह हटाना होगा और आम जनता को शिक्षित बनाना होगा। सरकार को कम संतान उत्पन्न करने वाले दम्पत्तियों को सम्मानित करना चाहिए या कोई पुरस्कार देना चाहिए जिससे लोग प्रोत्साहित होकर संतान उत्पत्ति में कमी लाएँ।

महत्वपूर्ण बिन्दु:

1. जनसंख्या वृद्धि हमारे देश की सबसें गम्भीर समस्या है। विश्व की जनसंख्या के आधार पर चीन के बाद भारत दूसरे स्थान पर है।
2. जनगणना के अनुसार 1901 में भारत की जनसंख्या केवल 238.4 मिलियन थी जो 2011 में बढ़कर 1210.2 मिलियन हो गयी है।
3. जनसंख्या विस्फोट ने हमारे सामने कई समस्याएं जैसे भुखमरी, स्वच्छ पीने योग्य पानी की कमी, आवास की कमी, स्वच्छता का अभाव, आवगमन की समस्याएँ, सीमित चिकित्सा एवं शिक्षा सुविधाएँ, पर्यावरण प्रदूषण, बेरोजगारी, शोषण आदि उत्पन्न कर दी है।

4. भारत की तेज रफ्तार से बढ़ती हुई आबादी हमारे चहुँमुखी विकास के लिए बाधक सिद्ध हो रही है। इस बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रण में लाने के लिये सरकार ने ''परिवार कल्याण कार्यक्रम'' चला रखा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अनुरूप जन्मदर को घटाकर जनसंख्या को स्थिर रखना है।
5. आधुनिक युग में जहाँ लड़कियाँ हर क्षेत्र में लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है, वही पुत्र प्राप्ति की इच्छा जनसंख्या वृद्धि का एक बड़ा कारण है।
6. जनसंख्या शिक्षा द्वारा बढ़ती जनसंख्या दर को घटाने हेतु परिवार कल्याण कार्यक्रम के द्वारा लोगों को जनसंख्या शिक्षा दी जा रही है।

अभ्यासार्थ प्रश्न:

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें:

(1) सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है:–
(अ) भारत (ब) चीन
(स) पाकिस्तान (द) जापान

(2) 1901 की तुलना में 2011 में भारत की जनसंख्या में वृद्धि हो गई:–
(अ) 186.64 प्रतिशत (ब) 330.8प्रतिशत
(स) 84.27 प्रतिशत (द) 408.0 प्रतिशत

(3) जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रण में लाने का सबसे कामयाब तरीका है:–
(अ) कल्याण कार्यक्रम (ब) रोजगार योजना
(स) परिवार नियोजन (द) ग्रामीण विकास योजनाएँ

(4) जनसंख्या वृद्धि का एक बड़ा कारण है:–
(अ) औद्योगिकीकरण (ब) पुत्र की चाह
(स) शहरीकरण (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(5) विश्व का करीब ..... प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है:–
(अ) 16 (ब) 17
(स) 18 (द) 15

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये:–

(1) बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि योग्य भूमि निरन्तर ..... भूमि में बदलती जा रही है।

(2) ..... के फलस्वरूप गरीबी, बेरोजगारी, पर्यावरण प्रदूषण, शोषण, अपराध जैसी कई समस्याएँ हमारे सामने मुँह फाड़े खड़ी है।

(3) ..... द्वारा दम्पति स्वयं की इच्छानुसार सुनियोजित तरीके से एक या दो बच्चों को जन्म देकर अपने परिवार को छोटा एवं सीमित रख सकते है।

(4) ..... तथा ..... द्वारा बालिकाएँ आज समाज में सम्मानित स्थान पा रही है।

3. बढ़ती आबादी का भोजन, आवासीय भूमि, पीने का पानी एवं स्वच्छता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
4. परिवार नियोजन कार्यक्रम क्या है और कब शुरू हुआ था?
5. एक किशोर/किशोरी बढ़ती जनसंख्या दर को घटाने मे क्या योगदान दे सकते है?
6. जनसंख्या वृद्धि एवं उससे उत्पन्न समस्याओं पर, कक्षा में अध्यापक की सहायता से चर्चा करें।

उत्तरमाला:

1. (1) ब (2) द (3) स
(4) ब (5) अ
2. (1) आवासीय (2) जनसंख्या विस्फोट
(3) परिवार नियोजन (4) शिक्षा, रोजगार